ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 333-334

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

नाथपंथ में गोरखनाथ

डॉ0 राघवेन्द्र प्रताप मिश्र | प्रवक्ता– दर्शनशास्त्र विभाग, बुद्ध पी0जी0 कॉलेज, कुशीनगर (उ0प्र0), भारत

Received- 04.12. 2021, Revised- 08.12. 2021, Accepted - 13.12.2021 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांश: ***नाथ सम्प्रदाय में शैव, शाक्त बौद्ध, जैन, वैष्णव, एवं आगमों के थोड़े बहुत तत्व किसी न किसी रूप में मिलते हैं, इसीलिए नाथ सम्प्रदाय में सभी धर्मों के तत्व अनुस्यूत है। इसके उद्भव का थोड़ा बहुत विवरण ऋग्वेद में शैवोपासक ब्रात्यों तक से जोड़ा जा सकता है। नाथ पंथी अपने नाथ योग धर्म के आदि उपदेशक के रूप में स्वयं आदिनाथ शिव को मानते हैं। आगे चलकर गोरखनाथ ने अपने बारह सम्प्रदायों को विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित कर अखण्ड भारत में नाथपंथ के प्रभाव को फैलाया यह निर्विवाद सत्य है।***

कुंजीभूत शब्द– शैव, जैन, वैष्णव, सम्प्रदाय, अनुस्यूत, विवरण, शैवोपासक ब्रात्यों, योग धर्म, उपदेशक ।

नाथ मत की परम्परा में नवनाथों का उल्लेख मिलता है। इन नवनाथों ने अपनी उर्वर चिन्तन क्षमता के बल पर नाथमत को व्यापक विस्तार दिया है। नवनाथों में प्रसिद्ध गोरखनाथ, जालंधरनाथ, चौरंगीनाथ, चर्पटीनाथ, भर्तृ हरिनाथ गोपीचन्द और कानिफनाथ आदि के बारे में विद्वानों में मतभेद है। अनेक अनुश्रुतियों पौराणिक साहित्यों और मठों से प्राप्त साहित्य के आधार पर जीवनवृक्ति को स्पष्ट करने का प्रयास विद्वानों ने किया है। फिर भी एक सामान्य निश्कर्श नहीं दिया जा सकता है।

गुरु मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य महायोगी गोरखनाथ ने नाथमत को भारत के कोने–कोने में एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचाया था। विद्वानों का ऐसा अनुमान है कि गोरखनाथ का आविर्भाव नवीं शताब्दी में हुआ था। इस प्रभाव का ही परिणाम था कि भारत के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक उनके कृत्यों की अनेक जनश्रुतियाँ फैली थीं। लोक वार्ताओं के निपुण पुरुष बने उनके अद्भूत चमत्कारों की चर्चा लोगों की प्रेरणा का कारण बनी।

गोरखनाथ महायोगी थे। उन्होंने योगानुभव के बल पर प्रत्यक्ष तत्व का साक्षात्कार किया था। गोरखनाथ के विषय में अक्षय कुमार बनर्जी ने अपने ग्रन्थ 'फिलासफी ऑफ गोरखनाथ' में सम्यक् रूप से विचार करते हुए लिखा है– "तर्क और कल्पना के आधार पर परम तत्व की खोज करना उनका लक्ष्य न था। प्रापंचिक जगत के परे या पीछे यह उसके आधार स्वरूप किसी पारमार्थिक सत्ता के अस्तित्व का तर्क द्वारा खण्डन या मंडन करना उन्हें अभिष्ट न था............ विवादास्पद दार्शनिक समस्याओं के विश्लेशण में उन्होंने स्वयं को कभी नहीं उलझाया। किसी प्रतिस्पर्धी दार्शनिक सिद्धान्त के विरोध में किसी विशिष्ट सिद्धान्त के प्रवर्तक के रूप में अपनी बौद्धिक क्षमता का प्रदर्शन नहीं किया। वे जानते थे कि परम सत्य के निरूपण में बौद्धिक स्तर पर मत–वैभिन्य स्वाभाविक है : उन्होंने दार्शनिक धारणाओं और विवादों को परम सत्य की अनुभूति के साधन रूप में कभी महत्व नहीं दिया। उन्होंने दार्शनिक सिद्धान्तों को बौद्धिक अनुशासन की पद्धतियों के रूप में मूल्यवान माना और सत्य के अन्वेशण में सहायक समझा, यह भी उस स्थिति में जबकि दार्शनिक चिन्तन नम्रतापूर्वक निष्ठा और सच्चाई के साथ किसी विशिश्ट दार्शनिक मत के प्रति पक्षपात रहित होकर किया जाये।

गोरखनाथ ने योग साधना की शिक्षाओं के साथ–साथ अपने सम्प्रदाय के दर्शन का भी सहज रूप में प्रचार किया। उन्होंने अपनी समाधि अवस्था की अतिमानसिक तथा अतिबौद्धिक अनुभूतियों को अपने दर्शन का आधार बनाया। उनके दार्शनिक सिद्धान्त का भारतीय दार्शनिक पद्धतियों में विशेश स्थान है। उनका अपना निजी महत्व एवं मूल्य है। उनके दार्शनिक विचारों पर उनके निजी व्यक्तित्व का विशेश प्रभाव है जिसके कारण ही वे सर्वग्राह्य बने।

गोरखनाथ का नाथ योगी सम्प्रदाय भारत के सर्वाधिक प्रचलित धार्मिक सम्प्रदायों में से एक है– इसीलिए ब्रिग्स ने लिखा है– 'कनफटा योगी भारत में सभी जगह पाये जाते हैं। ये किसी भी धार्मिक सम्प्रदाय से अधिक विस्तृत है। वे दक्षिण से उत्तरी भाग, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, गंगा के मैदानी प्रान्तों, नेपाल में तपस्वियों और यतियों के रूप में कभी छिट–पुट कभी दलों में संगठित मिलते हैं।

गोरखनाथ का योगी सम्प्रदाय सिद्ध योगी, दर्शनी योगी या कनफटा योगी, नाथ योगी, या नाथ सम्प्रदायी के नाम से जाना जाता है। एक योगी को शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक विधियों का अनुपालन करना जरूरी है। इसके अभाव में योगी चेतना के उच्चस्थ शिखर पर आसीन नहीं हो सकता।

गोरखनाथ अपने युग के महान धार्मिक नेता थे। इनके युग में भारतीय धर्म साधना में काफी कुरीतियाँ आ गई थीं। ये कुरीतियाँ पूर्ववर्ती ओर समसामयिक अनेक सिद्धों में भी थीं। गोरखनाथ का आविर्भाव इन सबके लिए एक प्रतिद्वन्द्वी के समान था। जब–जब उन्हें अवसर मिला तब–तब उन्होंने विकारग्रस्त सिद्धों को ललकारा। गोरखनाथ ने अपने सम्प्रदाय के प्रचार के लिए

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

लोक भाशा का प्रयोग किया। गोरखबानी के आधार पर अधिकांश विद्वानों ने इनकी भाशा को पश्चिमी हिन्दी माना है। साथ ही यह भी स्वीकार किया गया है कि पूर्वी बोलियों, मगहरी, भोजपुरी अवधी के शब्दों का अनुकूल प्रयोग किया है। डॉ0 कमल सिंह ने उनकी मिश्रित भाषा सन्ध्या को सान्ध भाशा कहा है। इस सन्ध्या भाषा के द्वारा गोरखनाथ ने योग परक तथ्यों को गोपनीय बनाने का यत्न किया है। साथ ही अलौकिक तथ्यों को लौकिक तत्वों के सहारे स्पश्ट करने के लिए भी इसी भाषा का उपयोग किया है।

जनसाधारण को समझाने के लिए इन्होंने सांसारिक उपादानों का सहारा लिया है। इसलिए वे उपादान उनके इतने अपने हो गये थे कि इन्हें वे अपने उपदेशों के दौरान योगपरक रूप में या आध्यात्मिक प्रतीकों की तरह प्रयोग करते थे। यही कारण है कि उनकी यह सन्ध्या भाशा रूपात्मक, प्रतीकात्मक, विरोधात्मक और अद्भूत रसात्मक रूपों में मिलती है।

गुरु गोरखनाथ में संगठन की क्षमता अपूर्व थी। उन्होंने अपनी भरपूर क्षमता का उपयोग अपने सम्प्रदाय को संगठित करने में किया था। यही कारण है कि आज भीयोगी सम्प्रदाय जीवित हैं। गोरखनाथ का यह विशेष योगदान योगी सम्प्रदाय के लिये अविस्मरणीय है।

वास्तव में गुरु गोरखनाथ धर्मगुरु थे। उनके चरित्र में कहीं दुर्बलता न थी। कुशाग्रबुद्धि थे। उनके तत्कालीन धर्म समाज तथा गृहस्थ समाज में सात्विक वृत्ति और अखण्ड ब्रह्मचर्य की भावना निम्नतर दशा में पहुँच चुकी थी। जन–जीवन में धार्मिक चेतना अपने पारमार्थिक भाव से विमुख हो रही थी। ऐसे सभय में उन्होंने दृढ़ता दिखाई और डट कर अनावश्यक धार्मिक रूढ़ियों और कुरीतियों का विरोध किया। ज्ञान के उपासक होने के नाते भावुकता उनमें कम थी। वे मानते थे कि जब एक अखण्ड सच्चिदानन्द ही सत्य है तो भावावेश महत्व ही क्यों दिया जाय। उन्होंने इसीलिये द्वैताद्वैत विलक्षण स्वसंबेद्य का पक्ष लिया।

नाथ सम्प्रदाय में गोरखनाथ के स्थान को निर्धारित करते हुए अशोक प्रभाकर कामत ने लिखा है कि 'मध्यकाल को अंधकार युग कहा है। इस अज्ञानकाल में भारतीय धर्म–साधना को पुनः एक बार विशुद्ध रूप से सर्वव्यापक और प्रभावशाली बनाने का श्रेय अधिक से अधिक किसी को देना हो तो वह नाथमत के महान सुधारक एवं प्रचारक गोरखनाथ को दिया जाना चाहिये।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नाथ सम्प्रदाय– डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी, नेवैद्य निकेतन, वाराणसी।
2. नाथ सम्प्रदाय और साहित्य–वेद प्रकाश जुनेजा, श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर।
3. कबीर ग्रन्थावली– डॉ0 श्याम सुन्दर दास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
4. हठयोग प्रदीपिका– डॉ0 चमन लाल गौतम, संस्कृत संस्थान (वेदनगर)।
5. योगवाणी, वर्श 1 जनवरी, 1976 से दिसम्बर, 1976 तक, गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर।

*****